

## Марям сураси 31 оят

03:15 / 08.06.2017 4647

مِ يَحْرُلْ لِمَنْ حَرَّلَهُ لَلْمَسْبِ

أَيَّ حُتْمُ دَامِرَةَ الْكُزْلِ أَوْ لَصَلَابِ يَنْصُورُ وَأُتُنُكَ أَمَّ نَيَّ الْكَرَابُ مِ يَنْلَعَجَ وَ

**«Марям» 31. Мени қаерда бўлсам ҳам, муборак қилди. Модомики, ҳаёт эканман, намоз ва закотни тавсия қилди.**